पॉल रॉबिसन

लेखन: एलोइस ग्रीनफील्ड

चित्र: जॉर्ज फोर्ड

भाषान्तर:
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

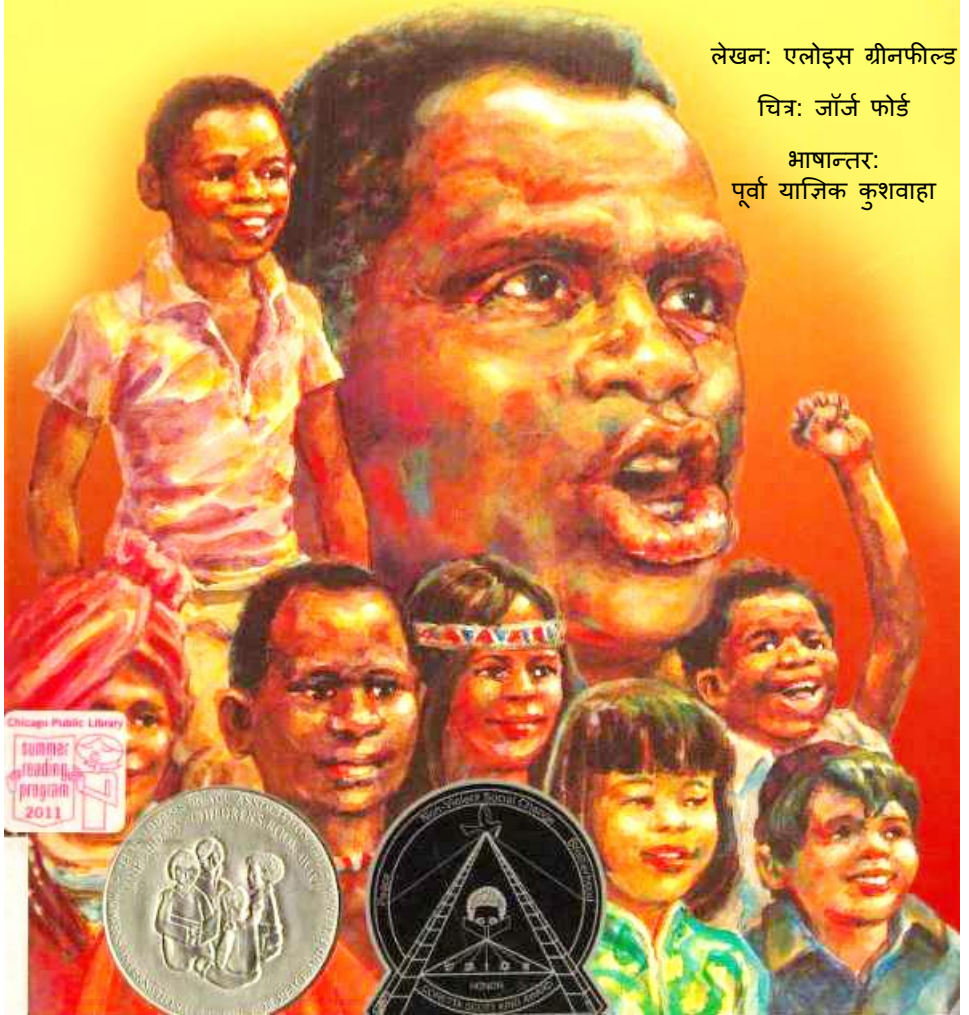

पॉल रॉबिसन

पॉल रॉबिसन का जन्म 9 अप्रेल 1898 में हुआ था। वे एक पादरी के बेटे थे। उन्होंने अपने पिता से लिखे और बोले गए लफ्ज़ों से प्यार करना, काले होने पर फ़क्र करना और जो वे सही मानते हों उसका पक्ष लेना सीखा था। इन उसूलों ने पॉल को ज़िन्दगी भर राह दिखाई।

हाई स्कूल और कॉलेज में पढ़ाई-लिखाई और खेलकूद में सफलता पाने के बाद पॉल एक गायक और अभिनेता के रूप में भी मशहूर हुए। उनकी प्रतिभा और खनकदार आवाज़ ने दुनिया भर में प्रशंसक जीते। देश-विदेश में सफ़र करने के दौरान उन्होंने जो ग़रीबी और अन्याय देखा उससे वे बेहद विचलित हुए। 1940 और 50 के दशक में वे इसके ख़िलाफ़ बोलने लगे। उन्होंने आज़ादी के लिए संघर्ष किया। उस ज़माने में इस तरह की सक्रियता बर्दाश्त नहीं की जाती थी। सो उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार का दुश्मन माना गया।

पूरी गरिमा और गत्यात्मकता के साथ खिलाड़ी, गायक, अभिनेता और नागरिक अधिकारों के सक्रियकर्मी पॉल हमेशा अपने और अपने उसूलों के प्रति वफ़ादार बने रहे। उनके जीवन के इस संशोधित संस्करण से नई पीढ़ी के पाठक इस जुझारू व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे।

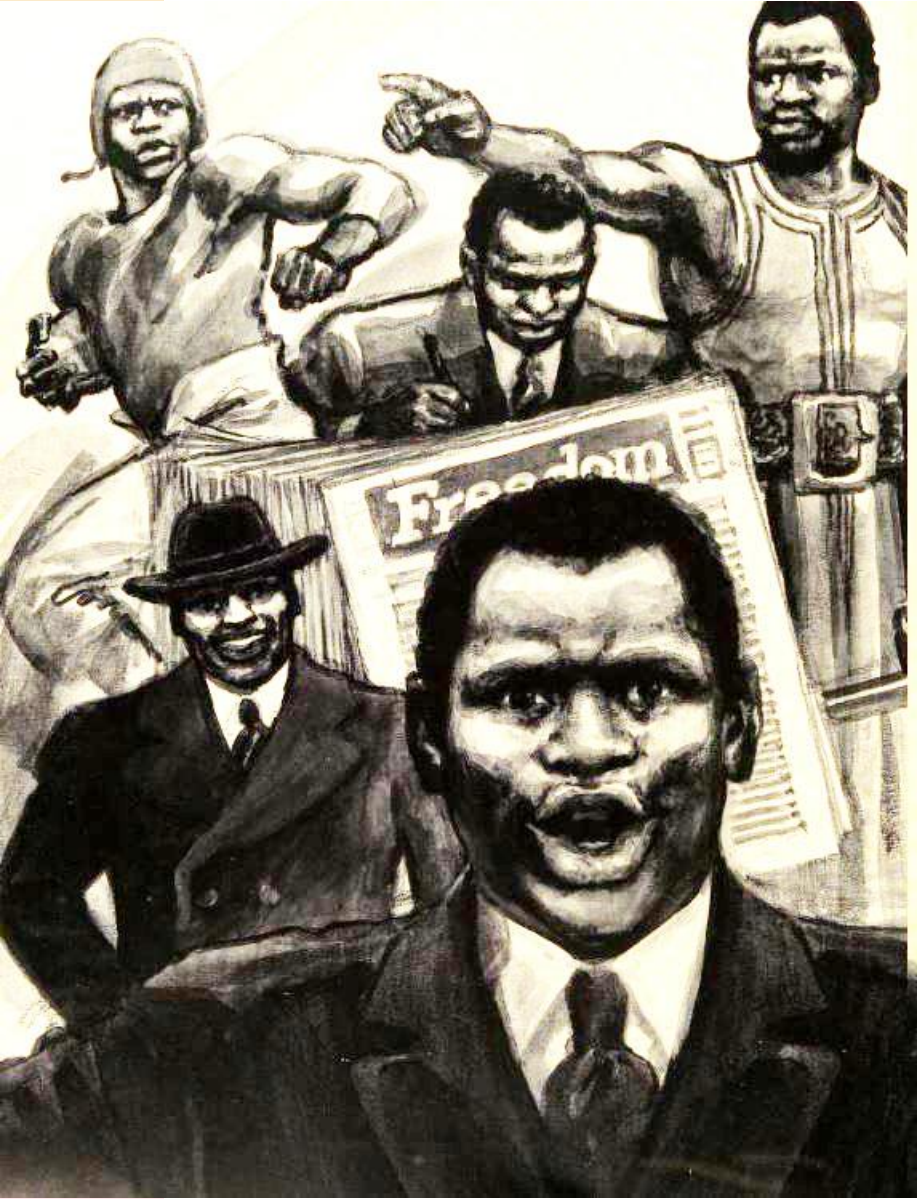

पॉल रॉबिसन

लेखन: एलोइस ग्रीनफील्ड

चित्र: जॉर्ज फोर्ड

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लेखिका की कलम से

पॉल रॉबिसन का नाम 1930 और 40 के दशक में बीते मेरे बचपन की नायाब यादें उभारता है। मुझे उनको टेलिविज़न पर नहीं बल्की रेडियो पर गाते सुनना याद है। इसलिए क्योंकि तब टेलिविज़न था ही नहीं। मुझे उनकी आवाज़ बेहद पसन्द थी। वह गहरी, बहुत ही गहरी थी और उसमें कम्पन था, न बहुत अधिक न बहुत कम, बिलकुल सही मात्रा में। वे गाते तो उनका गाया एक-एक लफ्ज़ सच लगता था।

पॉल रॉबिसन मशहूर थे और कई लोग उनसे बेइन्तहा प्यार करते थे। उन्हें पॉल का गायन पसन्द था और उनकी अदाकारी भी, अपने भाषणों में वे जो कहते उसके भी वे प्रशंसक थे। पर 1940 का दशक खत्म हो उसके पहले कुछ लोगों ने पॉल के लिए परेशानियाँ खड़ी कीं। उनके मंच पर अभिनय करने या गाने पर पाबन्दियाँ लगाई जाने लगीं। इससे उनके प्रशंसक नाराज़ हुए। पॉल के सामने आई ये बाधाएं भी इस कहानी का अहम हिस्सा हैं। आप पॉल रॉबिसन की हिम्मत और साहस, दुनिया भर के लोगों की मदद करने की इच्छा के बारे में भी इस क़िताब में जानेंगे।

इस कहानी का ज़्यादातर हिस्सा उनके लड़कपन के बारे में है। परिवार उनके लिए अहम था। उनके हुनर को पनपाने में परिवार ने ही मदद की थी। जब कम उम्र में परिवार ने भारी दुख झेला तब दोस्तों और पड़ौसियों ने उनके परिवार की मदद की।

पॉल एक ऐसे इन्सान बन सके जिसे दुनिया कभी भुला नहीं सकेगी। मुझे उम्मीद है कि आपको उनसे परिचित होना अच्छा लगेगा।

- एलोइस

ग्रीनफील्ड, 2009

विलियम डी. रॉबिसन बचपन में ग़ुलाम थे। वे उत्तर कैरोलाइना के एक खेत-बागान में बिना मेहनताना पाए ही खटने को मजबूर थे। उन्हें ग़ुलामी से नफ़रत थी। इतनी कि पंद्रह बरस की उम्र में ही उन्होंने एक ख़तरनाक कदम उठाया।

वे भाग निकले!

यह जानते हुए भी कि अगर पकड़े गए तो मालिक चाबुक से पीटेगा या मौत के घाट ही उतार देगा। पर विलियम ने आज़ाद होने का पक्का इरादा कर लिया था।

वे उत्तर को गए, जहाँ उन्होंने पढ़ाई की और कॉलेज का स्नातक बनने के बाद उन्होंने मारिया लुइसा बस्टिल से शादी की। वे न्यू जर्सी के प्रिंस्टन शहर में विदरस्पून स्ट्रीट प्रैसबायटेरियन चर्च के पादरी बने।

प्रिंस्टन एक बड़े विश्वविद्यालय के गिर्द बसा एक छोटा-सा शहर था। यह विश्वविद्यालय सिर्फ़ गोरों के लिए था। शहर में रहने वाले गोरे अक्सर विश्वविद्यालय में अपनी बैठकें और दावतें करने जाया करते थे। पर कालों की बैठकें और दावतें करने की जगह थी रैवरेण्ड रॉबिसन का गिरजा।

8 अप्रेल 1989 को रैवरेण्ड और उनकी पत्नी के सबसे छोटे बच्चे का जन्म हुआ। उन्होंने उसका नाम रखा पॉल लीरॉय रॉबिसन।

जिस समय पॉल पैदा हुआ रैवरेण्ड रॉबिसन त्रेपन साल के थे। उनकी पत्नी बीमार रहती थीं और लगभग अंधी भी थीं। अपने मोटे चश्मों के बावजूद वे साफ़ देख नहीं पाती थीं। इन स्थितियों के बावजूद पॉल की माँ, पिता, बहन और तीनों बड़े भाइयों ने नन्हे शिशु का दिल से स्वागत किया।

जब पॉल तीन बरस के ही थे कि चर्च के सदस्यों के बीच बहस के कारण उनके पिता को पद से हटा दिया गया। रैवरेण्ड रॉबिसन के लिए यह एक बड़ा धक्का था। पर परिवार को पालने के लिए उन्होंने एक नया तरीका तलाश लिया। उन्होंने बैस नामक एक घोड़ी और एक गाड़ी खरीदी। प्रिंस्टन के बाशिन्दे उन्हें अपनी कोयले की भट्टियों से राख उठा ले जाने के लिए पैसे देने लगे।

पॉल अक्सर बैस और गाड़ी को घर के पिछवाड़े खड़े देखते ताकि पिता राख उलीच सकें। उनकी बैस से खासी दोस्ती हो गई।

कभी-कभार पॉल का भाई रीव बैस को एक बड़ी बग्घी में जोत सवारियों को उनके ठिकाने पहुँचाने ले जाता। इन सवारियों में प्रिंस्टन विश्वविद्यालय के छात्र भी होते। रीव को कई बार उनसे भिड़ना पड़ता, क्योंकि वे काले लोगों के बारे में फब्तियाँ कसते थे।

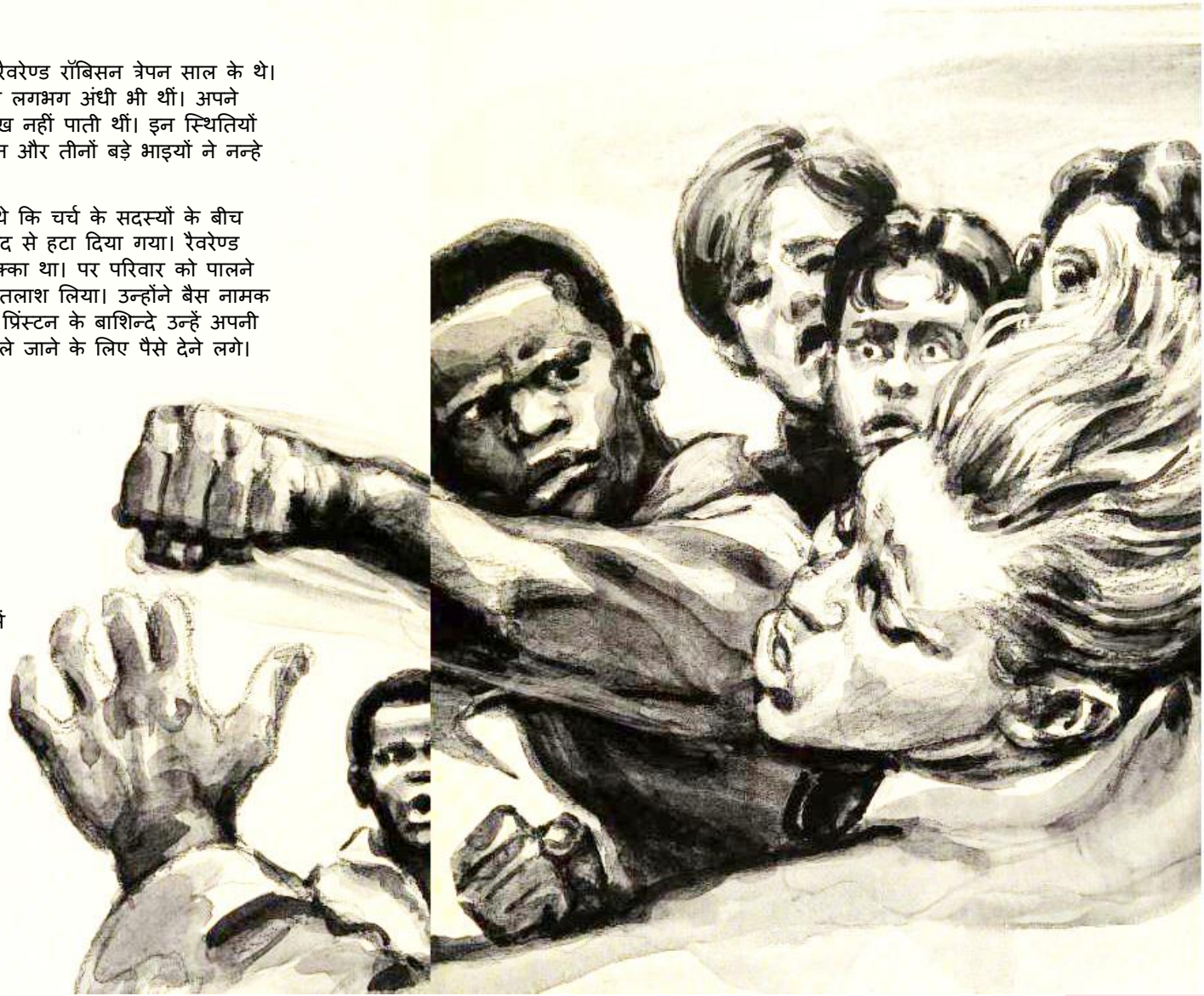

पॉल अपने भाइयों रीव, बिल, मैरिएन और बैन के प्रशंसक थे। वे सब भी अपने छोटे भाई से बेहद प्यार करते थे। रीव ने पॉल को अपने हक़ों के लिए लड़ना सिखाया। पॉल अपनी उम्र के हिसाब से काफ़ी लम्बे-चौड़े थे, सो उनके भाइयों ने उन्हें फुटबॉल खेलना सिखाया। कई बार रात के खाने के बाद सब बच्चे मिलकर गाते थे। पॉल को तब बेहद खुशी होती जब छुट्टियों में बिल कॉलेज से घर आता और पूरा परिवार एक साथ होता।

जब पॉल छह बरस के हुए परिवार को एक भारी त्रासदी झेलनी पड़ी। एक दिन उनकी माँ घर में साफ़-सफ़ाई कर रही थीं जब वे घर को गरम रखने वाले कोयले के अलाव से टकरा गईं। उनकी लम्बी पोशाक ने आग पकड़ ली और वे जल गईं।

पहले तो नादान पॉल को विश्वास ही नहीं हुआ कि माँ की सच में मौत हो गई है। बाद में माँ की कमी उन्हें बेहद खलने लगी। रॉबिसन परिवार के इस कठिन दौर में पास रहने वाले रिश्तेदारों और दोस्तों ने छोटे बच्चों को खयाल रखा। वे उन्हें रात का खाना खिलाने बुला लेते और कई-कई दिनों तक अपने साथ भी रखते। ये मददगार कोई पैसे वाले लोग नहीं थे, पर जो कुछ उनके पास था उसे वे बखुशी साझा करते। वे इन बच्चों से सच में प्यार करते थे और उन्हें बेहतर महसूस करवाने की हरचन्द कोशिश करते थे।

इस दौरान पॉल अपने पिता के और क़रीब आते गए। वे दोनों साथ-साथ चैकर्स खेलते और पढ़ते। पिता पॉल को कविता पाठ करना, भाषण देना सिखाते और स्कूल से मिले गृहकार्य में मदद करते।

पॉल को स्कूल अच्छा लगता था। यह सच है कि शिक्षकों को कभी-कभार शैतानी करने के लिए पॉल को सज़ा देनी पड़ती थी। पर अपना गृहकार्य वे हमेशा करते। पॉल ने अपने पिता से हमेशा अपना सबसे बेहतरीन करने का महत्त्व सीखा। और भी कई चीज़ें पॉल ने अपने पिता को देख-सुन कर सीखीं। जैसे लफ्ज़ों से प्यार करना - लिखे और बोले गए लफ्ज़ों से। काले समुदाय से होने पर फ़क्र करना सीखा। यह भी कि वह ज़रूर करना चाहिए जिस पर उन्हें पूरा यक़ीन हो।

पत्नी की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद रैवरेण्ड रॉबिसन फिर से एक गिरजे के पादरी बने। यह गिरजा प्रिंस्टन के पास वैस्टफील्ड में था।

इसके बाद वे प्रिंस्टन के पास ही समरविल के गिरजे के पादरी भी रहे।

जब पॉल अपने पिता को गिरजे में प्रवचन देते सुनते उन्हें बड़ा ही फ़क्र होता। वे यह समझने लगे थे कि रैवरेण्ड के शब्द गिरजे के सदस्यों के लिए कितना मायने रखते हैं। यह भी कि लोगों को न केवल रैवरेण्ड का कहा भाता था बल्की उनकी गहरी मंद्र आवाज़ और लय भी मुग्ध करती थी।

पॉल गिरजे के गायक दल के साथ गाया करते थे। उनका पसन्दीदा संगीत था ब्लैक स्पिरिच्युअल। जब अफ्रीका से अगुवा कर, गुलाम बना कालों को अमरीका में लाया गया, उन्होंने अपने मूल संगीत में स्थानीय संगीत और शब्द जोड़े, इस मिश्रण से स्पिरिच्युअल संगीत का जन्म हुआ।

समरविल हाई स्कूल के ग्ली क्लब (संगीत समूह) में पॉल एकल गीत गाया करते थे। वे गाते तो अच्छा थे पर बड़े होने पर गायक बनने का सपना उनका नहीं था। स्कूल में ही एक वर्ष उन्होंने नाटक *ओथेलो* में हिस्सा लिया जो चार सौ वर्ष पहले विलियम शेक्सपीयर द्वारा लिखा गया नाटक था। पॉल ने नाटक के मुख्य पात्र, एक अफ्रीकी जनरल का किरदार निभाया। पर नाटक के मंचन के पहले वे इस कदर घबराए कि उन्होंने खुद से वादा किया कि वे फिर कभी अभिनय नहीं करेंगे।

पर कई वर्षों बाद पॉल *ओथेलो* और दूसरे नाटकों में अपने अभिनय के लिए और अपने गायन के लिए दुनिया भर में मशहूर हुए। पर अपनी किशोरावस्था में वे यह नहीं जानते थे।

गर्मियों की छुट्टियों में पॉल बेन के साथ रोड आइलैण्ड में जाते। वहाँ वे अमीरों के लिए बने एक होटल की रसोई में काम करते। बेन वहीं वेटर का काम करता था।

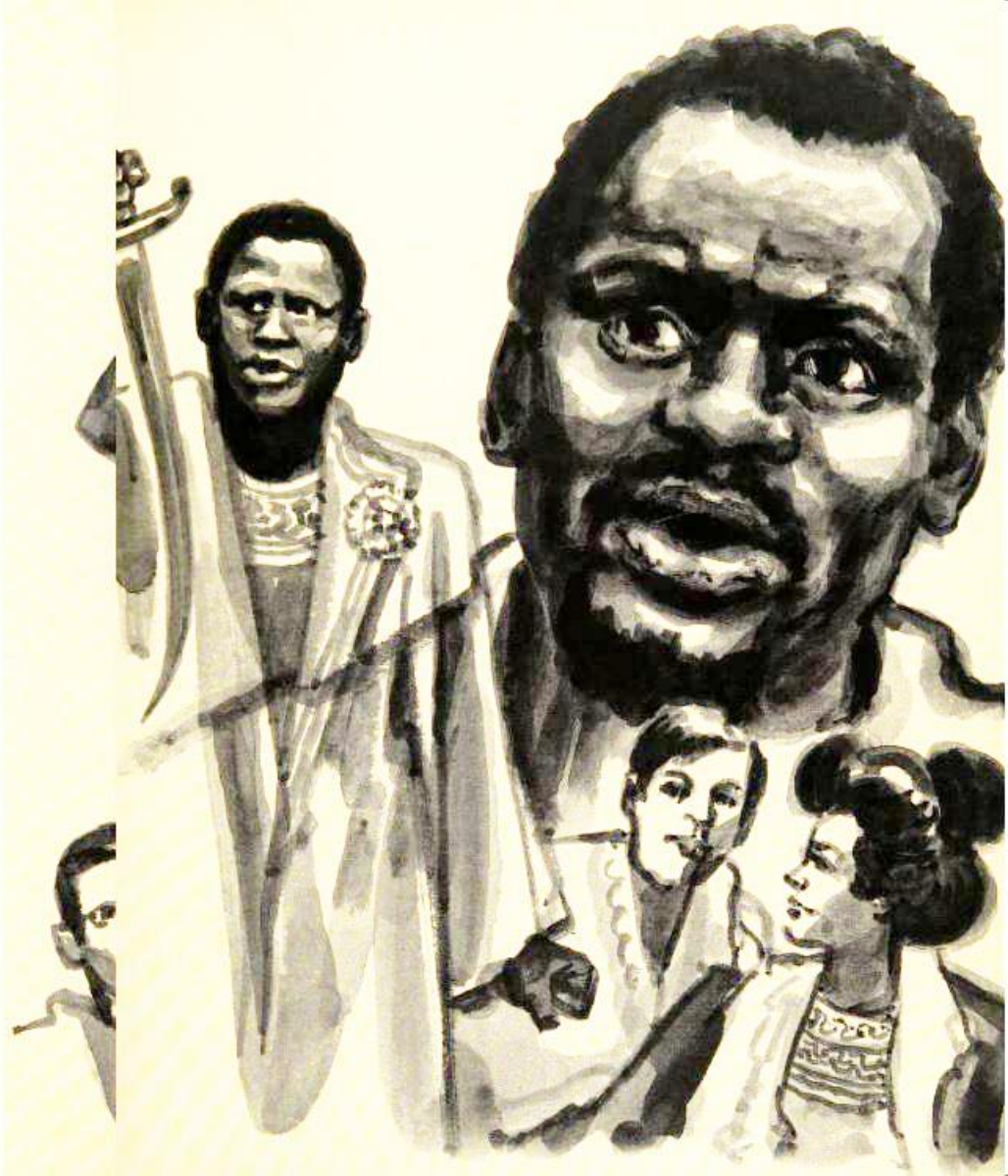

स्कूल में पॉल फुटबॉल, बेसबॉल और बास्केटबॉल खेला करते थे। वे स्कूल की 'ट्रैक टीम' का हिस्सा थे। वाद-विवाद क्लब के सदस्य के नाते वे वाद-विवाद में हिस्सा लेते। इस सबके बावजूद पॉल पढ़ने का समय निकालते। पॉल ने 1915 में सम्मान (आनर्स) के साथ स्कूली पढ़ाई पूरी की।

उन्होंने रटगर्स कॉलेज में, जो बाद में रटगर्स विश्वविद्यालय बना, पढ़ने के लिए चार वर्ष की छात्रवृत्ति भी जीती। इसका मतलब था उनकी पढ़ाई पर उन्हें कोई खर्चा नहीं करना था।

पॉल अब तक खासे लम्बे-चौड़े हो चुके थे। वे शान्त स्वभाव के आत्मसम्मानी युवक थे जो कॉलेज की पढ़ाई को ले उत्सुक था।

रटगर्स में केवल एक ही और काला छात्र था। पॉल के हाई स्कूल की ही तरह, जहाँ कुछ ही काले छात्र थे। हाई स्कूल में पॉल को कुछ गोरे छात्रों और शिक्षकों से परेशानियाँ हुई थीं, यही रटगर्स में भी हुआ।

हालांकि पॉल को ग्ली क्लब में गाने की छूट थी वे कार्यक्रमों के बाद होने वाली दावतों में शिरकत नहीं कर सकते थे। ना ही वे ग्ली क्लब के साथ दूसरे शहरों की यात्रा कर सकते थे। जब उन्होंने कॉलेज की फुटबॉल टीम से जुड़ने की कोशिश की तो दूसरे खिलाड़ी एक काले खिलाड़ी को टीम में शामिल नहीं करना चाहते थे। अभ्यास और चयन के पहले ही दिन गोरे खिलाड़ी पॉल पर टूट पड़े और उन पर तड़ातड़ मुक्के बरसाए।

पॉल जब घर लौटे उनका कंधा चोटिल था, चेहरे और शरीर पर घाव थे। इन चोटों से उबरने के दौरान पॉल को यह सोचने का वक़्त मिला कि उन्हें टीम में शामिल होने की कोशिश फिर से करनी चाहिए या नहीं। पॉल को पिटना, घायल होना पसन्द नहीं था, पर वे डरपोक भगोड़ा भी नहीं कहलाना चाहते थे।

पॉल यह समझते थे कि अगर उन्हें टीम में चुन लिया जाता है तो इससे युवा काले खिलाड़ियों का हौसला बढ़ेगा। सो वे पूरे संकल्प के साथ अभ्यास पर लौटे। वे जानते थे कि वे खासे कद्दावर और तगड़े हैं। साथ ही वे अपनी हाई स्कूल की टीम के सितारा भी रह चुके थे। उन्हें भरोसा था कि अगर दूसरे खिलाड़ी नियमों के हिसाब से खेलें तो वे कोच के सामने अपना दम-खम साबित कर सकते हैं।

पहले दौर में पॉल एक खिलाड़ी से भिड़े और उसे बॉल समेत धरती पर पटक दिया। इतने में दूसरा दौड़ता हुआ आया, उसने अपना पैर उठाया और पॉल के हाथ को कुचल दिया। फुटबॉल जूते के नुकीले दांतों से पॉल की उंगलियाँ चोटिल हो गईं।

पॉल को गुस्सा आया। इतना जितना पहले कभी न आया था। दर्द और खिलाड़ी की नाइन्साफ़ी ने उन्हें आग-बबूला कर पगला दिया। अगले दौर में उन्होंने हमला करने वाले खिलाड़ी को अपने सिर से ऊपर उठा लिया। वे उसे पटखनी दे गिराने ही वाले थे कि कोच दौड़ते हुए पॉल के पास आ गए।

"पॉल तुम टीम में हो," कोच ने चीख कर कहा, "मैं टीम के लिए तुम्हें चुन रहा हूँ।"

पॉल ने हमलावर खिलाड़ी को नीचे उतार दिया।

पॉल का होना रटगर्स टीम की खुशकिस्मती थी। वे जल्द ही सबके चहेते बन गए। अख़बारों में उस लम्बे काले खिलाड़ी के बारे में लिखा जाने लगा। अख़बार यह बयान करते न थकते कि बॉल ले उनके पास से गुज़रने वाले खिलाड़ी को पॉल कैसे रोक लेते थे। यह भी कि अपने लम्बे हाथों से हवा में उछली बॉल को पॉल कैसे लपक लेते थे और टचडाउन के लिए दौड़ लगाते थे। किसी भी रटगर्स के खिलाड़ी के आड़े आने वालों से वे कैसे टकराते थे।

भीड़ 'बिग रॉबी' को देखने आती। और उस भीड़ में लगभग हमेशा ही अपने बेटे को देखने आए रैवरेण्ड रॉबिसन भी होते थे।

पॉल और उसके पिता अब भी एक-दूसरे के काफ़ी क़रीब थे। जब भी पॉल सप्ताहान्त पर घर आते दोनों घंटों साथ गुज़ारते। पॉल ने तय किया कि वे वकील बनना चाहते हैं, जबकि उनके पिता चाहते थे कि वे पादरी बनें। पर रैवरेण्ड यह समझ गए कि पॉल बड़े हो रहे हैं और उन्हें खुद फैसले लेने देना चाहिए।

पॉल जब कॉलेज के तीसरे साल के अंत में थे रैवरेण्ड रॉबिसन की मृत्यु हो गई। जब पॉल को पढ़ाई का अपना आखिरी वर्ष पूरा करने रटगर्स लौटना पड़ा उनका मन भारी था। उन्हें यह अफ़सोस था कि पिता उन्हें स्नातक बनते नहीं देख सकेंगे।

1919 में स्नातक बनने का दिन भी आया। पॉल तब इक्कीस बरस के थे। उन्होंने कॉलेज में कई सम्मान जीते। उन्हें प्रतिभावान छात्रों के समूह फाई बीटा काप्पा में चुना गया। वे वाद-विवाद के चैम्पियन रहे। उन्होंने चार खेलों में पुरस्कार जीते। उन्हें दो बार 'ऑल अमेरिकन एण्ड' घोषित किया गया था। मतलब वे समूचे अमरीका के सबसे बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक माने गए।

स्नातक हो रहे छात्रों में सबसे उम्दा होने के कारण पॉल को विदाई भाषण देने के लिए चुना गया। मंच पर खड़े हो पॉल ने खुद अपने और अपने सहपाठियों की ओर से रटगर्स को अलविदा कहा।

अगले साल पॉल कोलम्बिया विश्वविद्यालय के लॉ स्कूल में पढ़ने न्यू यॉर्क आए। पढ़ने के दौरान पैसे कमाने के लिए वे सप्ताहान्त पर व्यावसायिक फुटबॉल खेलते थे। उनका अधिकतर खाली समय हारलम में बीतता जहाँ वे रहते थे। हारलम, न्यू यॉर्क शहर का वह हिस्सा था जहाँ काले समुदाय के लोग बहुतायत में रहते और काम करते थे। पॉल ने वहाँ के लाफायत थियेटर में नाटक देखे। वे अपने दोस्तों से मिलते-जुलते और दावतें भी करते।

इन दावतों में सबको पॉल का गाना सुनना पसन्द आता था। कोई एक दोस्त पियानो बजाता और पॉल स्पिरिच्युअल्स गाते। ये गीत घर से इतनी दूर अगुआ कर लाए गए गुलामों की व्यथा बखानते, गुलाम बच्चों की गुलामी से बच निकलने की, अज़ादी की दिशा में ले जाने वाली रेलगाड़ी पर सवार होने की कथा कहते। पॉल की गहरी, मोहक आवाज़ सुन कमरे में चुप्पी पसर जाती।

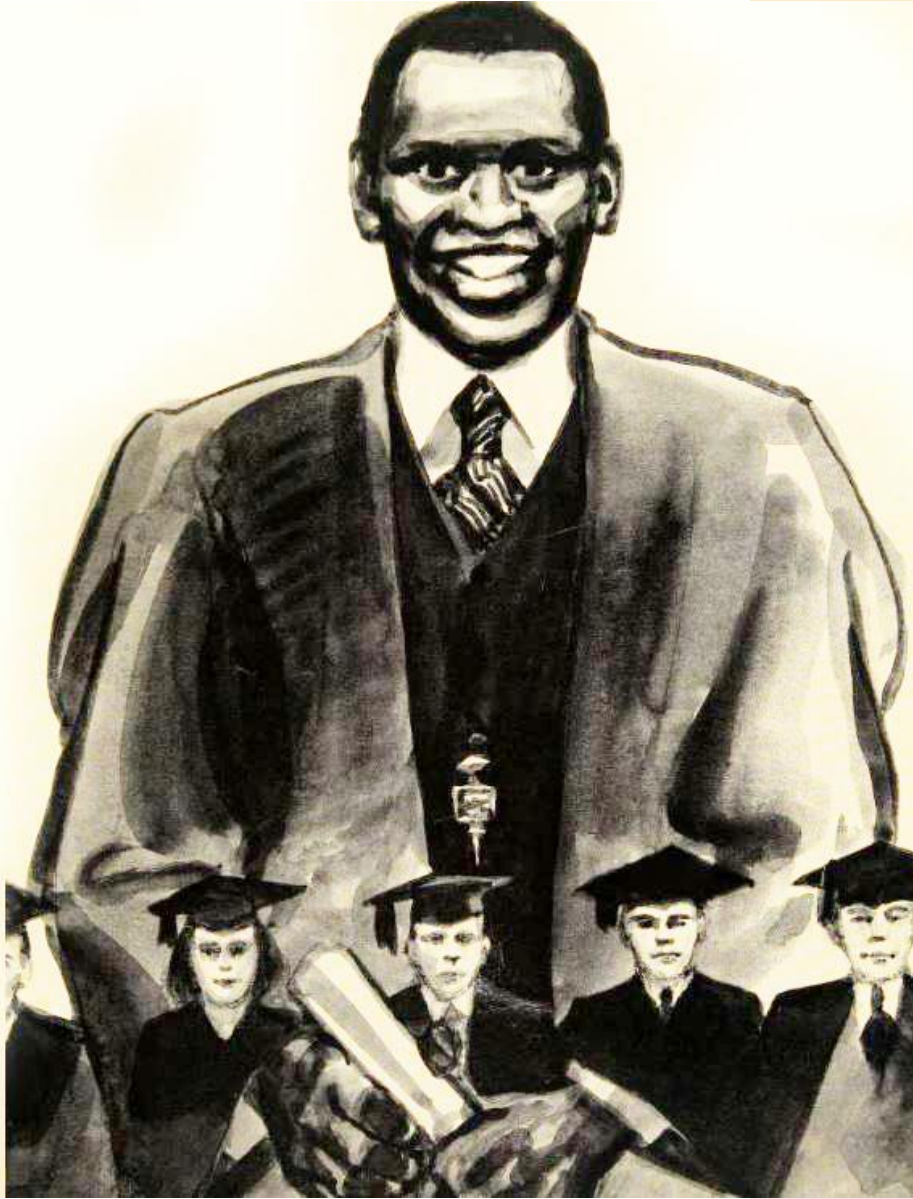

पॉल की बातचीत करने की आवाज़ भी उतनी ही गहरी और असरदार थी जितनी उनके गाने की। जब हारलम के यंग मैन्स् क्रिश्चियन एसोसिएशन (वायएमसीए) ने एक नाटक करने का फ़ैसला किया, पॉल के दोस्तों ने उनसे इसमें भाग लेने को कहा। पॉल ने एक बार फिर मुख्य पात्र का किरदार निभाया। पर इस बार वे उस तरह घबराए नहीं जितना वे हाई स्कूल में घबराए थे। लोगों ने उनके अभिनय की तारीफ़ की। पर पॉल ने इसे ख़ास तवज्जो नहीं दी। वे तो वकील बनना चाहते थे।

तब पॉल के साथ कुछ अद्भुत हुआ। एक मित्र ने उनका परिचय एस्लैण्डा गुड से करवाया, जो न्यू यॉर्क के एक अस्पताल में कैमिस्ट थीं। एस्लैण्डा के दोस्त उन्हें एस्सी कहा करते थे। पॉल और एस्सी एक-दूसरे से प्यार करने लगे। 12 अगस्त 1921 में दोनों ने शादी कर ली।

अगले साल पॉल को इंग्लैण्ड जाने का न्यौता मिला। वहाँ की एक थियेटर कम्पनी को एक काले अभिनेता की ज़रूरत थी। और किसी व्यक्ति ने, जिसने पॉल को अभिनय करते देखा था पॉल का नाम सुझाया था।

पहली बार तो पॉल अकेले ही इंग्लैण्ड गए। पर बाद में एस्सी भी साथ गईं। दोनों ने वहाँ के कस्बों और शहरों का सफ़र साथ-साथ किया। इंग्लैण्ड में ही पॉल की मुलाक़ात लॉरेन्स ब्राउन से हुई जो ताउम्र उनके मित्र बने रहे।

लॉरेन्स ब्राउन पियानोवादक थे। उन्हें भी ब्लैक स्पिरिच्युअल संगीत उतना ही पसन्द था जितना पॉल को। वे केवल उसे पियानो पर बजाते ही नहीं थे, बल्की उन्होंने उसे व्यवस्थित किया, उसके स्वर सही किए और कागज़ों पर उसकी स्वर-लिपि दर्ज कर डाली।

1923 में पॉल विधि के स्नातक बने। उस समय काले वकीलों के लिए काम तलाश पाना खासा मुश्किल था, खासकर किसी नए-नए वकील के लिए। पॉल को जैसे-तैसे एक गोरी विधि फर्म में काम मिला। पर वहाँ के कुछ गोरे सहकर्मियों ने पॉल के साथ काम करने से इन्कार कर दिया। कुछ सप्ताह बाद ही पॉल ने काम छोड़ दिया।

अब पॉल बेरोज़गार थे, पर नाटक निर्माता उन्हें अपने नाटकों में लेना चाहते थे। वे उनकी प्रतिभा को जानते थे और अच्छा भुगतान करने को तैयार थे। ज़ाहिर है पॉल मंच पर ज़्यादा दिखने लगे। कुछ नाटकों में पॉल ने अभिनय करने के साथ गाया भी।

पॉल ने अभिनय या गायन की औपचारिक शिक्षा कभी नहीं ली थी। पर वे यह कल्पना करने की कोशिश करते कि किरदार क्या महसूस करता होगा। तब वे उसे अपने अभिनय में उतारते। वे नाटक में अपने हिस्से को घंटों तक बार-बार पढ़ते। तब एकान्त में बैठ उस पर मनन करते।

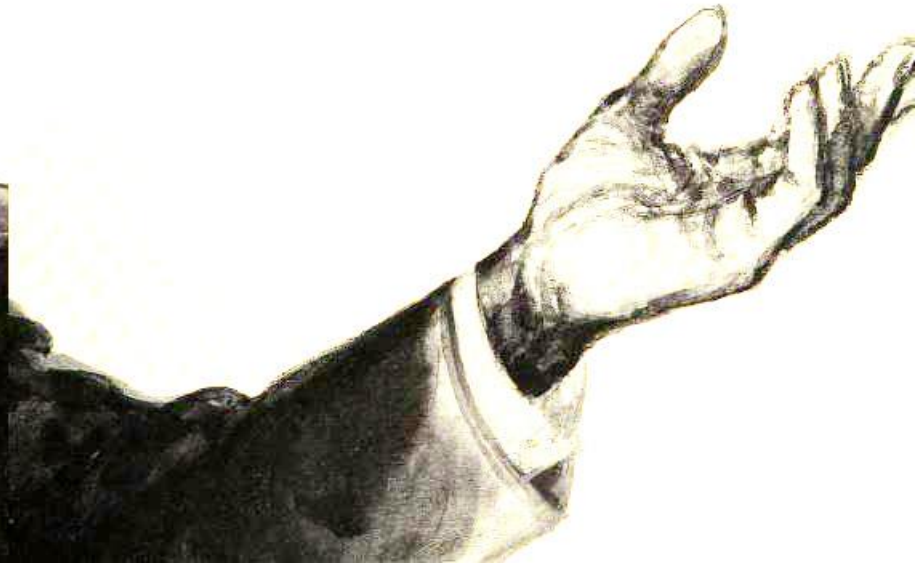

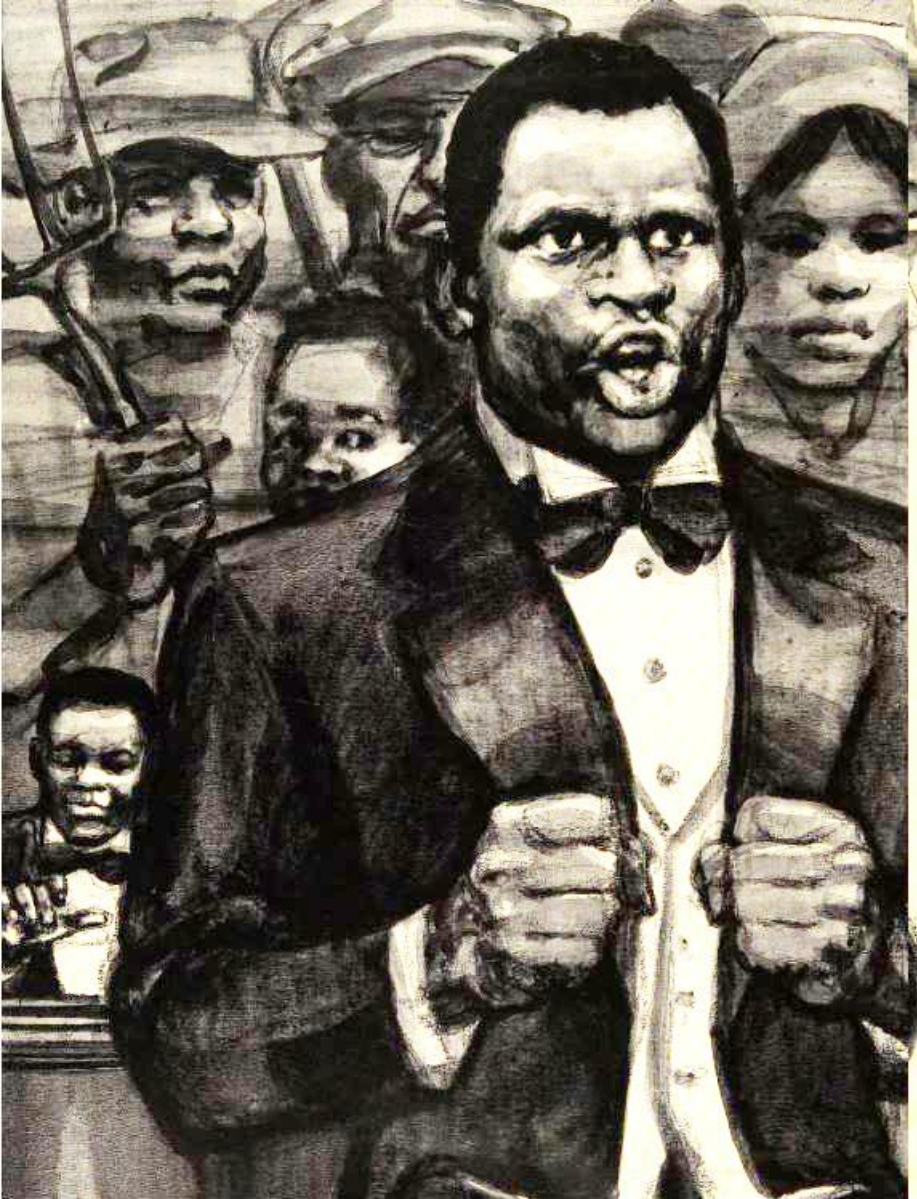

पॉल संगीत गोष्ठियों में भी भाग लेने लगे। 1925 में लॉरेन्स ब्राउन न्यू यॉर्क शहर आए। दोनों ने मिलकर ब्लैक संगीत की एक गोष्ठी की। ऐसी गोष्ठी का विचार तब नया था जिसमें कोई कलाकार स्पिरिच्युअल गीतों के साथ दूसरे काले गीत भी गाए। बहुत लोगों की इसमें रुचि जगी। थियेटर की सारी सीटें भर गईं। कुछ लोगों को तो पूरे समय खड़े-खड़े ही सुनना पड़ा।

लॉरेन्स ब्राउन ने पियानो बजाया और पॉल ने गाया। पॉल अपनी आवाज़ कभी तेज़ तो कभी कोमल करते, कभी खुशी से भरी तो कभी ग़मज़दा बनाते। वे हरेक स्वर सही-सटीक गाना चाहते थे। वे चाहते थे कि काला संगीत उनके मन में जो भावनाएं जगाता था उसका अहसास श्रोताओं को भी हो।

गोष्ठी समाप्त हो जाती पर श्रोता और-और सुनना चाहते। उनका मन ही नहीं भरता, वे चाहते कि गोष्ठी खत्म ही न हो।

पॉल रॉबिसन और लॉरेन्स ब्राउन की जोड़ी मशहूर हो गई। वे अगले कई सालों तक केवल अमरीका ही नहीं बल्की दुनिया के दूसरे मुल्कों में संगीत गोष्ठियाँ करते रहे। उन्होंने अफ्रीका, फ्रांस, वैस्ट इण्डीज़, रूस और इंग्लैण्ड में प्रदर्शन किए। पॉल ने संगीत की रिकॉर्डिंग की, कई नाटकों में अभिनय किया और रेडियो पर प्रस्तुतियाँ दीं।

2 नवम्बर 1927 को जब पॉल के बेटे का जन्म हुआ तो उस वक़्त भी वे इंग्लैण्ड में थे। पॉल और एस्सी ने शिशु का नाम पॉल जूनियर रखा। बाद में वे सफ़र करते समय कभी-कभी पॉल जूनियर को भी साथ ले जाने लगे।

पॉल को अलग-अलग देशों के लोगों से मिलना, उनसे बातचीत करना पसन्द था। वे उनकी भाषाएं सीखते, उनके गीत गाते। अफ्रीका से उन्हें ख़ास लगाव था। वहाँ के लोग, वहाँ की भाषाएं, उनकी कथा-कविताएं, संगीत और कला सबसे लगाव था। क्योंकि वे स्वयं काले थे, वे ख़ुद को अफ्रीका और उसके लोगों के बेहद क़रीब महसूस करते थे।

पॉल जहाँ भी जाते लोगों का हुजूम उनसे मिलने आता। शिक्षक अपने छात्रों को उनकी *ओथेलो* की प्रस्तुति दिखाने लाते। संस्थाएं उनके सम्मान में भोज आयोजित करतीं, उन्हें पुरस्कारों से नवाज़तीं। अख़बार और पत्रिकाएं उनकी तारीफ़ों के पुल बांधते। कहते कि पॉल जिस भी किरदार को निभाते हैं उसके हिसाब से अपनी चाल-ढ़ाल और बोलने के अंदाज़ को बदल लेते हैं। उनमें अदाकारी की ऐसी लियाक़त है कि वे अपने दर्शकों को खुशी और ग़म महसूस करवा पाते हैं।

पर पॉल इस तारीफ़ का लुत्फ़ नहीं उठा पाते थे। वे जहाँ जाते उन्हें वहाँ के लोगों की समस्याएं नज़र आतीं। यह उन्हें दुखी, चिन्तित और नाराज़ करता। पॉल ने देखा कि कुछ देश आपस में लड़ते हैं। यह भी कि काले समुदाय के लोगों के साथ नाइन्साफ़ी होती है। उन्होंने अफ्रीकी मुल्क देखे जिन पर गोरी सरकारों का राज था। कई देशों में उन्हें ऐसे लोग मिले जो इतने ग़रीब थे कि रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी ज़रूरतों के लिए तरसते थे।

पॉल को उनकी मदद किए बिना चैन न था।

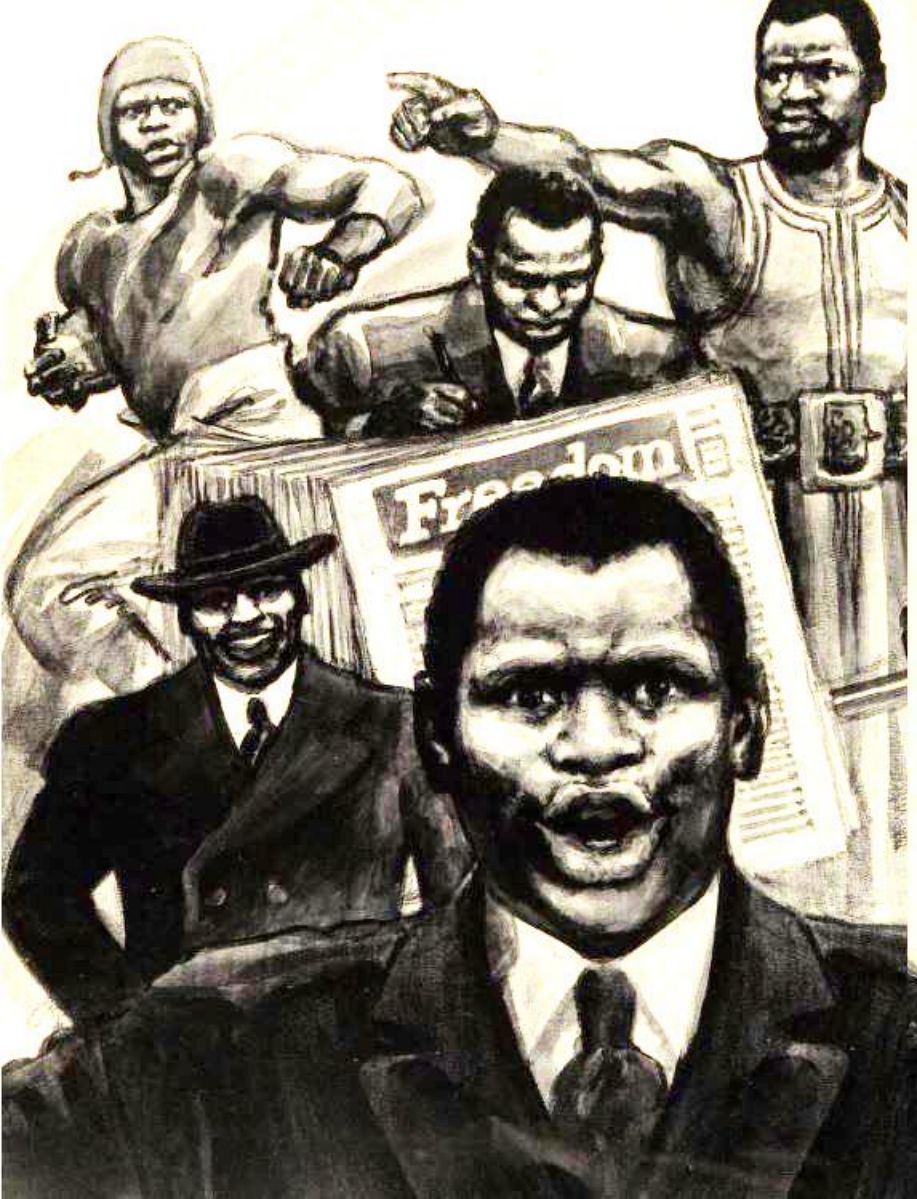

पॉल ने अपने सरोकारों पर बोलना शुरू कर दिया। वे अपनी संगीत प्रस्तुति के बाद बोलते। वे कालों की आज़ादी, उनके लिए बेहतर रोज़गार और शान्ति की बात कहते। श्रोता सुनते। कई लोग पॉल के विचारों को सुनना चाहते थे।

पर ज़ाहिर था कि सब नहीं।

हरेक यह नहीं चाहता था कि पॉल समस्याओं पर बोलें। पर पॉल जो सही मानते थे उसे कर गुज़रना भी ज़रूरी समझते थे। वे अक्सर अपने पिता को याद करते। वे उतना ही मज़बूत बनना चाहते थे जितने उनके पिता थे।

साल गज़रते गए, पॉल अन्याय पर बोलते रहे और अपने विरोध को अमली जामा भी पहनाते रहे। वे उन थियेटरों के सामने तख़्तियों साथ जुलूस निकालते जिनमें कालों को पीछे की सीटों या अलग बाल्कनियों में बैठाया जाता था। वे बेसबॉल टीमों के दफ्तरों के सामने विरोध जुलूस निकालते जो काले खिलाड़ियों को शामिल नहीं करते थे। दक्षिण में कालों की हत्याओं का विरोध करने वे अमरीका के राष्ट्रपति तक से मिले। उन्होंने *फ्रीडम* नामक अख़बार का प्रकाशन किया। उन्होंने तमाम ऐसे समूहों के गठन में मदद की जो कालों की आज़ादी के लिए जूझते हों। उन्होंने पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे।

पॉल अक्सर कम्यूनिस्टों (वामपंथियों) द्वारा आयोजित विशाल शान्ति बैठकों में शिरकत करते। वामपंथी विचार वाले लोग अकरीकी सरकार से अलग तरह की सरकार में विश्वास करते थे। सो कई अमरीकियों को कम्युनिस्ट नापसन्द थे। उन्हें डर लगता था कि वे अमरीका को भी एक कम्युनिस्ट देश बना डालेंगे।

1940 और 50 के दशक में वॉशिंगटन डी.सी. की कांग्रेस के, जो देश के कानून बनाती थी, कुछ सदस्य कम्युनिस्टों और उनके दोस्तों को सज़ा देने लगे। सो वामपंथियों की नौकरियाँ छीन ली गईं, उन्हें जेल जाना पड़ा। जो लोग चाहते थे कि पॉल रॉबिसन बोलना बन्द करें, उन्होंने पॉल को भी उनके वामपंथी दोस्त होने की वजह से दण्डित किया।

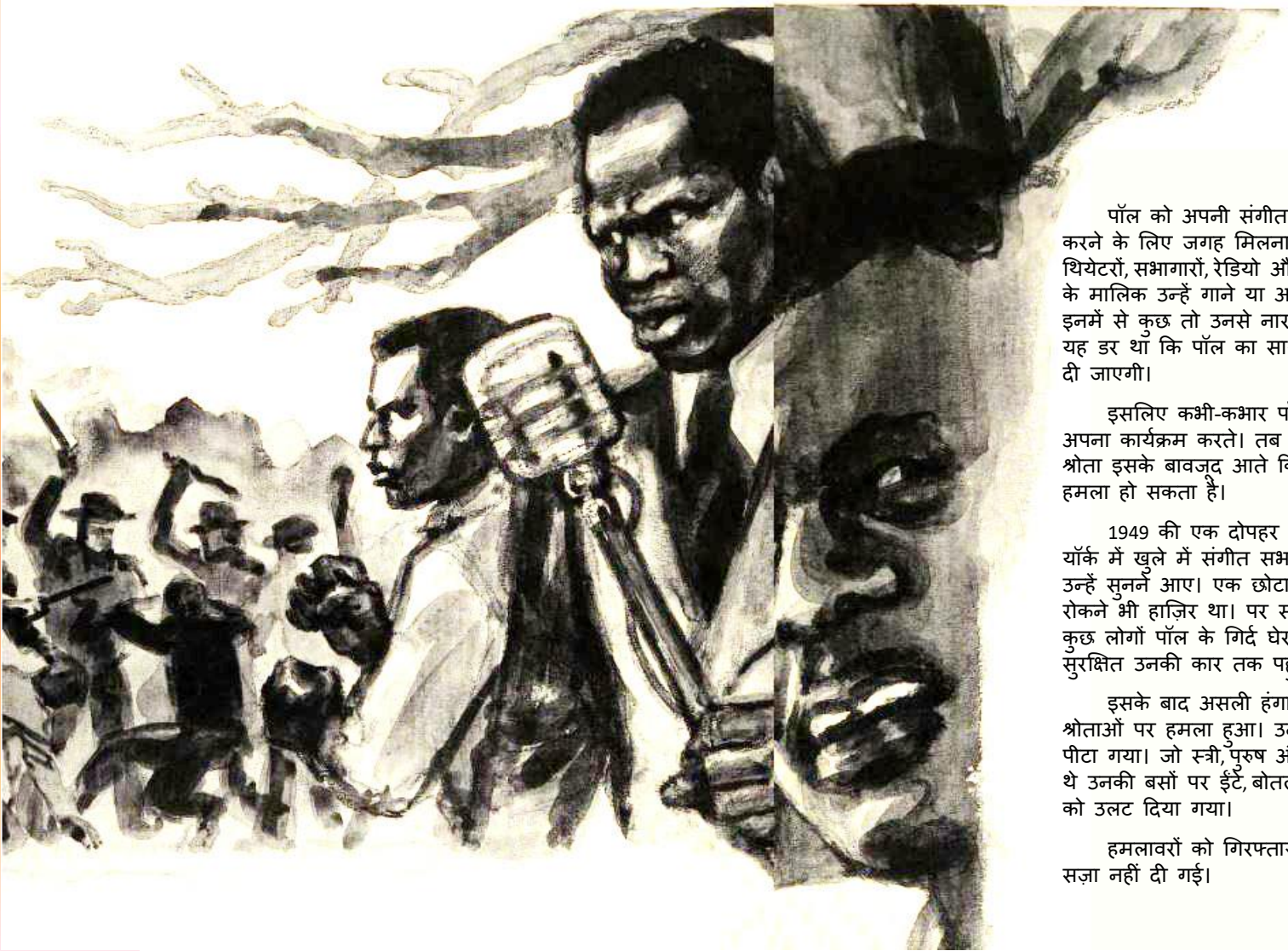

पॉल को अपनी संगीत गोष्ठियाँ और नाटक करने के लिए जगह मिलना मुश्किल हो गया। थियेटरों, सभागारों, रेडियो और टेलिविज़न कम्पनियों के मालिक उन्हें गाने या अभिनय नहीं करने देते। इनमें से कुछ तो उनसे नाराज़ थे, पर कुछ दूसरों को यह डर था कि पॉल का साथ देने पर उन्हें भी सज़ा दी जाएगी।

इसलिए कभी-कभार पॉल किसी चर्च या बाग़ में अपना कार्यक्रम करते। तब श्रोताओं की भीड़ उमड़ती। श्रोता इसके बावजूद आते कि पॉल के दुश्मनों का हमला हो सकता है।

1949 की एक दोपहर पॉल ने पीकस्किल, न्यू यॉर्क में खुले में संगीत सभा की। पच्चीस हज़ार लोग उन्हें सुनने आए। एक छोटा सा झुण्ड उन्हें गाने से रोकने भी हाज़िर था। पर संगीत गोष्ठी के अन्त में कुछ लोगों पॉल के गिर्द घेरा बनाया और उन्हें सुरक्षित उनकी कार तक पहुँचा दिया।

इसके बाद असली हंगामा शुरू हुआ। पॉल के श्रोताओं पर हमला हुआ। उन्हें लाठियों-बल्लमों से पीटा गया। जो स्त्री, पुरुष और बच्चे बसों से लौट रहे थे उनकी बसों पर ईंटें, बोतलें, काँच फेंके गए। कारों को उलट दिया गया।

हमलावरों को गिरफ्तार नहीं किया गया, कोई सज़ा नहीं दी गई।

अगले साल पॉल से कहा गया कि वे दूसरे मुल्कों में सफ़र नहीं कर सकते।

उनसे कहा गया "बोलना बन्द करो, सिर्फ़ गाओ!"

पॉल का जवाब था, "नहीं!" उन्होंने कहा कि उन्हें सफ़र करने और खुल कर अपने विचार रखने का हक़ है। वे अपना मामला अदालत ले गए, ताकि फ़ैसला वहीं हो।

जब तक मामले पर अदालत में सोच-विचार चल रहा था पॉल अमरीका से बाहर जा नहीं सकते थे। पर उनकी आवाज़ पर ऐसी पाबन्दी नहीं थी, वह जा सकती थी।

उन्होंने अमरीका और कनाडा की सरहद पर कई बार संगीत सभाएं कीं। उनका मंच सरहद के इस पार अमरीका में होता। उनके श्रोता उस पार कनाडा के किसी बाग में बैठे उनको सुनते।

एक बार तो इंग्लैण्ड में तकरीबन हज़ार श्रोता उस संगीत सभा में थे जहाँ पॉल मौजूद ही नहीं थे। पर उनकी आवाज़ फ़ोन के ज़रिए एटलांटिक महासागर के पार श्रोताओं ने सुनी। इस सभा में उनका समापन गीत था "ओल्ड मैन रिवर"। इस गीत की अंतिम पंक्ति थी कि एक इन्सान जीने से थक चुका है, पर मौत से डरता है। पॉल ने इसे बदल कर गाया - 'मुझे तब तक जूझते जाना है जब तक मेरी मौत न हो'।

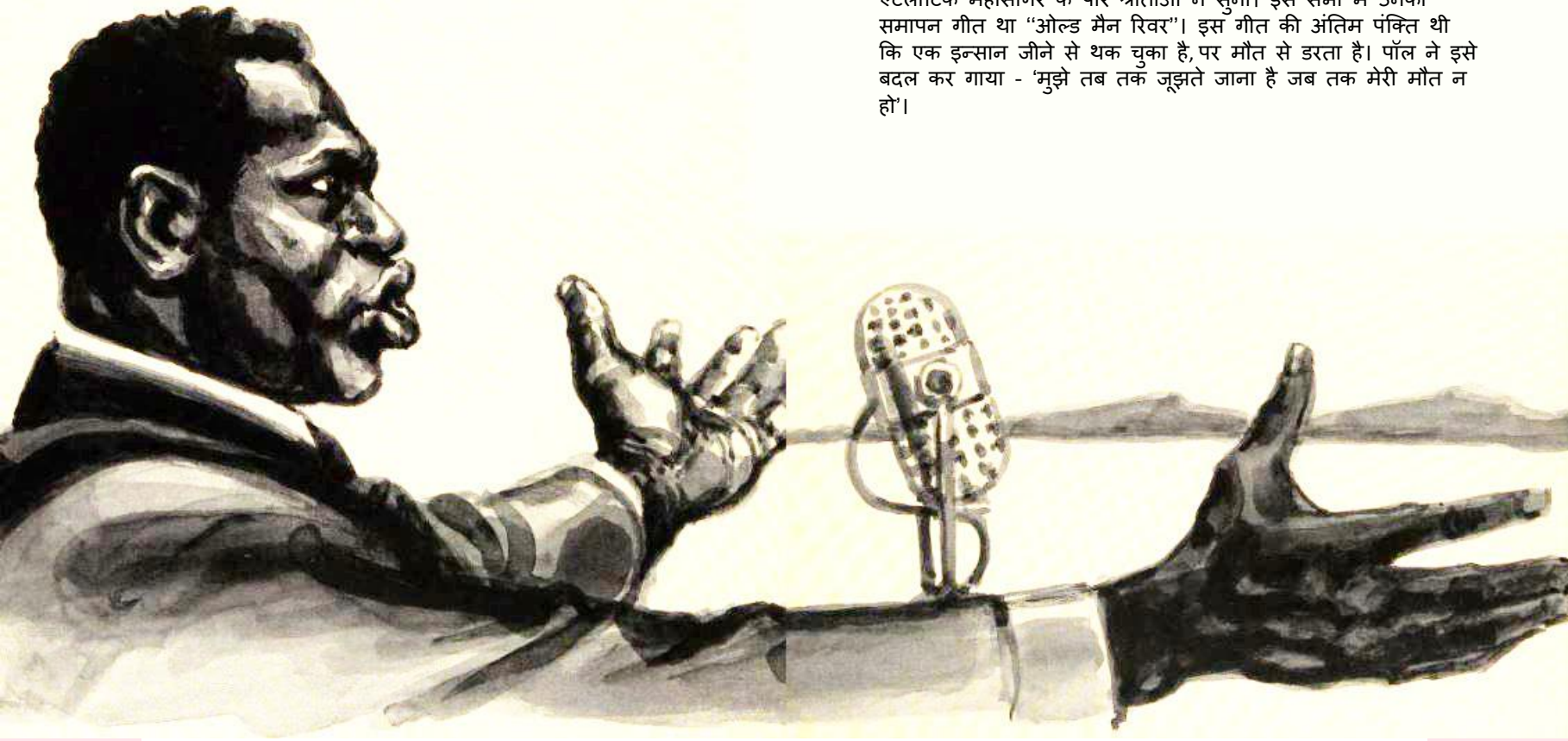

पॉल रॉबिसन संघर्ष करते रहे। वे सभी इन्सानों की आज़ादी के लिए लड़ते रहे। सफ़र करने के छीने गए हक़ को वापस पाने के लिए उन्हें कई बार अदालत जाना पड़ा। आख़िरकार 1958 में, आठ साल तक लगातार कोशिश करने के बाद वे जीते। पॉल फिर से यात्रा कर सके।

आगे आने वाले वर्षों में अमरीका के लाखों काले खुद को अपनी अफ्रीकी विरासत के क़रीब महसूस करने लगे। उन्होंने अपने हक़ों के लिए, बेहतर रोज़गार और भुगतान के लिए कई जुलूस आयोजित किए। कई काले गायक और अभिनेता कालों की आज़ादी के पक्ष में बोलने लगे। ठीक पॉल की ही तरह।

1959 में पॉल के सामने स्वास्थ्य समस्याएं आईं। वे हमेशा इतने सेहतमन्द नहीं रहते कि सफ़र कर सकें या प्रदर्शनों में हिस्सा ले सकें। आख़िरकार उन्हें अपना काम छोड़ना पड़ा। पर अपने न्यू यॉर्क वाले घर में रहने के लिए लौटने से पहले पॉल और एस्सी इंग्लैण्ड, रूस और जर्मनी में रहे। लम्बी बीमारी के बाद 1965 में उनका देहान्त हुआ।

पॉल ने एक क़िताब भी लिखी थी, शीर्षक था *हियर आई स्टैण्ड*। यह किताब बचपन और वयस्क होने के दौरान उनकी मान्यताओं पर है। उन्होंने इसमें कहा कि मेरे बचपन के वर्षों की शान दरअसल मेरे पिता ही थे।

अपने पिता की ही तरह पॉल रॉबिसन ने भी आज़ाद रहने का संकल्प किया था। उन्होंने कहा था कि हालांकि काले फिलहाल यह नहीं गा सकते - "शुक्रिया ऊपर वाले कि हम आख़िर आज़ाद हैं," पर कम से कम इतना तो गा सकते हैं, "शुक्रिया ऊपर वाल हम आगे बढ़ तो रहे हैं!"

पॉल रॉबिसन की मृत्यु 23 जनवरी 1976 में हुई।

उपसंहार

अप्रेल 1973 में पॉल की मृत्यु से क़रीब तीन वर्ष पहले उनकी पिचहत्तरवीं सालगिरह का जश्न न्यू यॉर्क के कार्नेगी हॉल में मनाया गया। विशाल श्रोता समूह के सामने क़रीब बीस जाने-माने कलाकारों ने उनके सम्मान में प्रस्तुतियाँ दीं। पर पॉल इतने अस्वस्थ थे वे मौजूद नहीं रह सके, पर उनके बेटे पॉल जूनियर ने उनकी जगह शिरकत की। वह अपने पिता के उतने ही क़रीब था जितना पॉल अपने पिता के।

पॉल की मृत्यु के बाद उन पर बहुत कुछ लिखा गया। नाटक और फिल्में बनीं जो उनके जीवन को दर्शाती थीं। अख़बारों और पत्रिकाओं में लेख लिखे गए, क़िताबें लिखी गईं। उनके योगदान को याद करते हुए उन्हें कई सम्मान दिए गए। 1995 में, यानी रटगर्स टीम के हीरो रहने के पिचहत्तर साल से भी ज्यादा के बाद उन्हें कॉलेज फुटबॉल हॉल ऑफ फेम में स्थान दिया गया। फरवरी 1998 में उन्हें संगीत के लिए ग्रैमी लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से नवाज़ा गया। और उस वर्ष पूरे साल अमरीका और दुनिया के लोगों ने पॉल रॉबिसन की जन्म शताब्दी मनाई। 2004 में डाक सेवा विभाग ने ब्लैक हैरिटेज सीरीज़ के तहत पॉल रॉबिसन का डाक टिकट जारी किया।

अपनी बीमारी के दौरान पॉल ने अपने काम के बारे में अपनी भावनाएं साझा की थीं। "हालांकि मेरी बीमारी ने मुझे काम छोड़ने पर मजबूर कर दिया है, आप विश्वास करें कि मैं अपने दिल में गाता रहूँगा। मैं मरने लगूँ तब तक संघर्ष करता रहूँगा।"

पॉल रॉबिसन ने एक सार्थक जीवन जिया और उसे गाया भी। हमारा सौभाग्य है कि उनकी रिकॉर्डिंग्स के कारण हम आज भी उनकी आवाज़ की ताकत, उसका वैभव और उसके सौन्दर्य को सुन व महसूस कर सकते हैं।